वानिकी समाचार

(अर्द्धवार्षिक)

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

वर्ष – 4 | जनवरी से जून 2012 | अंक – 1

13वीं अनुसन्धान योजना समिति की बैठक : नये शोध क्षेत्र तथा अभिज्ञात विषय

13वीं अनुसन्धान योजना समिति की बैठक 14 से 16 फरवरी 2012 को भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून में आयोजित की गई। बैठक के दौरान भा.वा.अ.शि.प. की अनुसन्धान प्रमुखताओं को खाद्य तथा जल सुरक्षा विशेषकर, ग्रामीण जनजातीय जनसंख्या की आजीविका पर ध्यान केन्द्रित करते हुए लोक केन्द्रित करने के लिए विचार विमर्श किया गया। बैठक के दौरान छः प्रमुखता वाले क्षेत्र तथा 35 विषय अभिज्ञात किये गये। नये शोध क्षेत्र आजीविका सहायता तथा आर्थिक विकास के लिए वन तथा वन उत्पादों का प्रबन्धन, जैवविविधता संरक्षण तथा पारिस्थितिक सुरक्षा, वन तथा जलवायु परिवर्तन, वन आनुवंशिकी संसाधन प्रबन्धन तथा वृक्ष सुधार, उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए वानिकी शिक्षा तथा नीति अनुसन्धान हैं। राष्ट्रीय कार्यक्रमों के कार्यान्वयन तथा निष्पादन की देखरेख के लिए सभी छः प्रमुखता वाले क्षेत्रों में राष्ट्रीय परियोजना निदेशक (एन.पी.डी.) नामांकित किये गये हैं।

अखिल भारतीय समन्वित परियोजनाएं (ए.आई.सी.पी.) अन्तर संस्थागत परियोजनाओं तथा संजालीय परियोजनाओं के रुप में परिकल्पित तथा कार्यान्वित की गई है जहां भा.वा.अ.शि.प., देहरादून के सभी संस्थानों के वैज्ञानिक एक ही लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संसाधनों के एकत्रीकरण द्वारा एक साथ कार्य करेंगे, जिसमे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के निवेश तथा परिणामों को एक दूसरे के साथ जोड़ा जायेगा। परिषद् ने पूर्व में परियोजना संविन्यास प्रभाग को पंचायत तथा मानव आयाम प्रभाग में पुनर्गठित कर दिया है जिसका प्रमुख सहायक महानिदेशक स्तर का अधिकारी है ताकि वन तथा गैर वन भू–उपयोग क्रियाकलापों की आधाररेखा विकसित करने पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए देश में पंचायत राज संस्थानों के साथ इंटरफेस करते हुए इसके क्रियाकलापों को विस्तृत किया जा सके। इस दिशा में 275 जिलों में कार्य चल रहा है।

वृक्ष उत्पादक मेला 2012

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने 23 तथा 24 फरवरी 2012 को वृक्ष उत्पादक मेला 2012 आयोजित किया, जिसका उद्घाटन श्रीमती जयन्ती नटराजन, माननीय राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार ने किया। आयोजन के दौरान उन्होने व.आ.वृ.प्र.सं. द्वारा प्रकाशित "प्रोसीडिंग्स आफ ट्रॉपिकल फारेस्ट स्ट्रकचर फंक्शन एण्ड सर्विसेस वर्कशाप","प्रोसीडिंग्स आफ कैज्यूरीना सैमीनार", "जैव उवर्रक तथा जैव खादों" पर पुस्तक, मैलाइना आरबोरिया और फ्रेंकिया पर क्लटीवेशन गाइडें,'वन अरिवियल',एक तमिल त्रैमासिक वानिकी समाचार, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान पर हिन्दी में एक ब्राउशर तथा "कैज्यूरीना पर एक उपज सारणी" का विमोचन किया। माननीय मंत्री जी ने व.अ.वृ.प्र.सं. द्वारा विकसित "जैव उवर्रक" तथा कीट नाशक "HyACT" जो कि पादप संविन्यास पर आधारित है का विमोचन भी किया। उन्होने व.अ.वृ.प्र.सं. के कर्मचारियों को उनकी अद्वितीय सेवाओं के लिए पुरस्कार वितरित किये।

इस अवसर पर डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में भा.वा.अ.शि.प. की उपलब्धियों को उजागर किया। उन्होने बताया कि भा.वा.अ.शि.प. ने अपने अनुसन्धान क्रियाकलापों को पणधारियों की आवश्यकताओं तथा लोगों की आजीविका के सुधार की ओर उन्मुख कर दिया है।

श्रीमती जयन्ती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री "वृक्ष उत्पादक मेला 2012" का उद्घाटन करते हुए

भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की 20वीं बैठक

भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की 20वीं बैठक 17 मई 2012 को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली में आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता श्रीमती जयन्ती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार ने की। डॉ. पी. जे. दिलीप कुमार, महानिदेशक (वन) तथा विशेष, सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., सहित अनेक उच्चाधिकारी बैठक में सम्मिलित हुए। श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने वर्ष 2011–12 के दौरान नए प्रयासों, भविष्य की योजनाओं तथा भा.वा.अ.शि.प. की उपलब्धियों पर एक प्रस्तुतिकरण दिया जिसकी सदस्यों ने भरपूर सराहना की। परीक्षित वार्षिक लेखा तथा वर्ष 2010–11 के लिए भा.वा.अ.शि.प. का वार्षिक प्रतिवेदन बैठक के दौरान सोसाइटी द्वारा पारित किया गया।

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली में भा.वा.अ.शि.प. सोसाइटी की 20वीं बैठक में श्रीमती जयन्ती नटराजन, माननीय पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार

कृषि विज्ञान केन्द्र के साथ वन विज्ञान केन्द्रों की नेटवर्किंग

गत पंच वर्षीय योजना के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश में वन विज्ञान केन्द्रों की स्थापना के भा.वा.अ.शि.प. के प्रयास का उद्देश्य परिषद् उसके संस्थानों तथा राज्य वन विभागों द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों को किसानों तथा वन आधारित उद्योगों सहित उपभोक्ता समूह तक प्रसारित करना है।

भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों ने देश के विभिन्न राज्यों में 26 वन विज्ञान केन्द्रों की स्थापना में राज्य वन विभागों के सक्रिय सहयोग से सफलता प्राप्त की है तथा विभिन्न स्थानीय एजेंसियों (गैर सरकारी संस्थाओं) को सम्मलित करते हुए 08 प्रदर्शन ग्राम स्थापित किये हैं।

उपलब्ध संसाधनों तथा आवश्यकता के मध्य के अन्तराल को भरने के लिए परिषद् द्वारा भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् (आई.सी.ए.आर) के साथ समन्वयन की योजना बनाई गई। इस संदर्भ में श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून तथा डॉ. के. डी. कोकाटे, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार), कृषि विस्तार प्रभाग, कृषि अनुसन्धान भवन, नई दिल्ली के बीच वन विज्ञान केन्द्र तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों को संयोजित करने से सम्बन्धित विषय पर नई दिल्ली में बैठक हुई जिसमें विस्तृत विचार विमर्श किया गया।

डॉ. कोकाटे ने कहा कि भा.वा.अ.शि.प. के कुछ संस्थानों को उनके अधिकार क्षेत्र में सम्बन्धित कृषि विज्ञान केन्द्रों के साथ संयोजित किया जा सकता है जिससे प्रौद्योगिकियों तथा वानिकी सम्बन्धित प्रजातियों की प्रक्रिया को प्रसारित किया जा सके ताकि किसानों को सीधा लाभ मिल सके। हाल ही में व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर तथा संभागीय निदेशक, कृषि विज्ञान केन्द्र जोन – VIII की व.अ.वृ.प्र.सं. में बैठक हुई तथा निदेशक व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर को इस बैठक के परिणामों के आधार पर कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्बन्धित निदेशक प्रभारी तथा संस्थानों के बीच प्रारुप एम.ओ.यू. के साथ कार्यात्मक दिशानिर्देश तैयार करने हेतु उत्तरदायित्व दिया गया है। ये दिशानिर्देश बाद में वन विज्ञान केन्द्रों तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों के संयोजन के लिए भा.वा.अ.शि.प. के सभी संस्थानों को भेजे जायेंगे।

डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर

उपभोक्ताओं/हितधारकों तक अनुसन्धान परियोजनाओं की पूर्णता पर प्रौद्योगिकियों के तत्काल हस्तांतरण के लिए एक नव प्रवर्तनकारी योजना "डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" प्रारम्भ की गई है।

भा.वाअ.शि.प. के वैज्ञानिक समुदाय के सक्रिय कार्य के द्वारा हितधारकों को प्रौद्योगिकियां उपलब्ध करवाने के अतिरिक्त कार्यान्वयन भी पी.पी.पी. मोड तथा संयुक्त सहयोग के रूप में किया जा रहा है।

सहायक महानिदेशक (भर्ती बोर्ड) इस योजना के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किये गये हैं। "डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" योजना के अधीन भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों से 17 परियोजनाएं उनके विस्तार के लिए अभिज्ञात की गई हैं। इस योजना के कार्यान्वयन के लिए एक पहल के रुप में व.अ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर ने हाल ही में पादप उत्तकों से न्यूक्लिक एसिड के पृथक्करण की प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाने के लिए बायोटेक कन्सोर्टियम इंडिया लि. के साथ एम.ओ.यू हस्ताक्षरित किया है। इसी प्रकार वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा विकसित लाख खेती क्रियाकलापों ने झारखण्ड के ग्रामीणों की आजीविका को सशक्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। "डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" योजना के अधीन "रीशेपिंग आफ एक्स्यूडेट गम" प्रौद्योगिकी सर्वश्री आनन्द गोंद उद्योग, नागपुर को ₹ 1.4 लाख की लाइसेंस फीस पर 18 जून 2012 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में हस्तांतरित की गई।

विदेशी बैठकों/कार्यशालाओं/संगोष्ठी इत्यादि में भा.वा.अ.शि.प. की सहभागिता

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., डॉ. एस. एस. नेगी, निदेशक, व.अ.सं., डॉ. वी. आर. आर सिंह, प्रभागाध्यक्ष, वन संवर्धन प्रभाग, व.अ.सं., तथा डॉ. एन. एस. के. हर्ष, प्रभागाध्यक्ष, रोग विज्ञान प्रभाग, व.अ.सं., ने एम.ओ.ई.ए., भारत सरकार के आई.टी.ई.सी. के कार्यक्रम के अधीन परामर्शी परियोजना "स्थानीय हितधारकों की सक्रिय सहभागिता के साथ वृक्षों का परिरक्षण तथा संरक्षण उपचार" में कार्य करने के लिए 28 जनवरी से 6 फरवरी 2012 तक कम्बोडिया तथा बैंकाक का दौरा किया।

डॉ. टी. एस. राठौर, निदेशक, शु.व.अ.सं., जोधपुर ने 6 से 8 मार्च 2012 को कृषि तथा वानिकी पर आसियान – भारत कार्य समूह की दूसरी बैठक में भाग लेने के लिए दक्षिण सुमात्रा का दौरा किया।

क्षमतावान लाख होस्ट पादप फ्लेमिंजिया सैमियालता राक्सब. पर लाख खेती

"डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" के अधीन जनजातियों की आजीविका बढ़ाने के लिए एक नव प्रवर्तनकारी योजना

पारम्परिक लाख होस्ट वृक्षों के घटते ओज तथा वन कटाव के कारण भारत की लाख उत्पादन क्षमता दिन प्रति दिन घट रही है। अतः लाख की खेती तथा लाख उत्पादन को बढ़ाने के लिए हमें लाख होस्ट की नई तीव्र बढ़वार वाली रोपणों को स्थापित करना होगा। इस संदर्भ में फ्लेमिंजिया सैमियालता, लाख होस्ट पादप की गहन खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। यह प्रजाति अपने छोटे आकार के कारण उगाने में आसान, सहज लाख संरोप्य तथा अनुश्रवण क्रियाकलाप के लिए बहुत उपयुक्त है। इस संदर्भ में वन उत्पादकता संस्थान, रांची किसानों में फ्लेमिंजिया सैमियालता के परिचय तथा प्रोत्साहन के लिए अद्भुत कार्य कर रही है तथा "डायरेक्ट टू कन्ज्यूमर" योजना के अधीन झारखण्ड के पांच विभिन्न गाँवों में फ्लेमिंजिया सैमियालता को पांच हेक्टेयर भूमि में रोपित किया गया है।

फ्लेमिंजिया सैमियालता पर लाख की बढ़वार

डॉ. वी. आर. एस. रावत, वैज्ञानिक – ई/अतिरिक्त निदेशक, वन तथा जलवायु परिवर्तन प्रभाग, भा.वा.अ.शि.प., देहारादून ने एस.बी.एस.टी.ए./एस.बी.आई., के 36वें सत्र, ए.डब्ल्यू.जी. – के.पी. के 17वें सत्र तथा डरबन प्लेटफार्म फार एन्हेन्सड एक्शन

पर तदर्थ कार्य समूह के पहले सत्र (ए.डी.पी.) में 14 से 25 मई 2012 को यू.एन. जलवायु परिवर्तन वार्ता में बॉन जर्मनी में आधिकारिक भारतीय दल के सदस्य के रुप में सहभागिता की।

भा.वा.अ.शि.प.,देहरादून द्वारा भा.व.से. अधिकारियों के लिए मध्य कैरियर प्रशिक्षण

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 18 अप्रैल 2012 से 2 मई 2012 के दौरान भा.व.से. अधिकारियों के लिए मध्य कैरियर प्रशिक्षण (एम.सी.टी.) फेज – III आयोजित किया। प्रशिक्षण के एक भाग के रुप में अधिकारियों ने स्वीडिश फारेस्ट एजेन्सी, स्टाकहोम तथा स्वीडिश यूनिवर्सिटी आफ एग्रीकल्चरल साईंसेज (एस.एल.यू.) उपसाला, स्वीडन में तथा कोलोराडो स्टेट यूनिवर्सिटी (सी.एस.यू.) फोर्ट कालिंस का दौरा किया।

श्री मारकस ओहमान, ग्रामीण मामलों के मंत्री, स्टाकहोम, स्वीडन के साथ बैठक करते हुए महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. तथा उप महानिदेशक (शिक्षा), ने एस.एल.यू. का दौरा किया ताकि जारी मध्य कैरियर प्रशिक्षण की सुविधाओं को देखा जा सके तथा वानिकी तथा वानिकी अनुसन्धान, विद्यार्थी तथा अध्यापक विनिमय कार्यक्रम, क्षमता निर्माण तथा वानिकी अनुसन्धान के क्षेत्र में विश्व बैंक से सहायता की संभावनाओं का आकलन किया जा सके। भा.व.से. अधिकारियों के मध्य कैरियर प्रशिक्षण के आन्तरिक अनुश्रवण तथा अन्तर्राष्ट्रीय समन्वयक के रुप में कार्यक्रम का समन्वयन करने के लिए श्री राकेश कुमार डोगरा, सहायक महानिदेशक (शिक्षा) भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 14 से 28 अप्रैल 2012 को कोलोराडो यूनिवर्सिटी यू.एस. तथा श्री सैन्थिल कुमार, उप वन संरक्षक (प्रशासन) भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 15 से 28 अप्रैल 2012 को स्वीडन का दौरा किया।

कार्यशालाएं/सैमीनार/बैठक इत्यादि

स्लेम् की राष्ट्रीय संचालन समिति (एन.एस.सी.) की तीसरी बैठक 28 फरवरी 2012 को आफरी, जोधपुर में श्रीमती मीरा महर्षि, अतिरिक्त सचिव, पर्यावरण एव वन मंत्रालय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में श्री बी. एम. एस. राठौर, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) तथा सदस्य सचिव, एन.एस.सी., यू.एन.डी.पी. तथा एफ.ए.ओ. के प्रतिनिधि, स्लेम – टी.एफ.ओ. के सदस्य, रेगिस्तानीकरण रोक प्रकोष्ठ के कर्मचारी, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा एक्शन फार फूड प्रोडक्शन, नई दिल्ली से एक को – आप्टिड सदस्य ने सहभागिता की।

आफरी, जोधपुर में तीसरी एन.एस.सी. की बैठक के दौरान श्रीमती मीरा महर्षि, अतिरिक्त सचिव, श्री बी. एम. एस. राठौर, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली, श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) भा.वा.अ.शि.प. एवं अन्य उच्चाधिकारीगण चर्चा करते हुए

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलौर तथा व.अ.सं, देहरादून ने रिविजन आफ नेशनल वर्किंग प्लान कोड – 2004 पर संयुक्त रुप से संभागीय कार्यशाला 13 तथा 14 जून 2012 को आयोजित की। कार्यशाला की अध्यक्षता श्री ए. के. मुखर्जी, पूर्व महानिदेशक (वन) तथा विशेष सचिव ने की। श्री ए. के. वर्मा, प्रधान मुख्य वन संरक्षक कर्नाटक, श्री एस. सी. जोशी, निदेशक, का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर, डॉ. पी. पी. भोजवैद, निदेशक, व.अ.सं., देहरादून तथा स्थानीय मुख्य वन संरक्षक, भारत सरकार तथा दक्षिणी तथा पश्चिमी राज्यों के विशेष वरिष्ठ वन अधिकारियों ने भी सहभागिता की।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलौर में नेशनल वर्किंग प्लान कोड – 2004 के परिशोधन पर संभागीय कार्यशाला

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने 21 तथा 22 मार्च 2012 को वन स्वास्थ्य प्रबन्धन एफ.एच.एम.–2012 पर एक राष्ट्रीय सेमीनार आयोजित किया। डॉ. पी. जे. दिलीप कुमार, भा.व.से. महानिदेशक (वन) तथा विशेष सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार तथा डॉ. के. रामास्वामी, कुलाधिपति, कारपागम विश्वविद्यालय, कोयम्बटूर तथा सदस्य राज्य योजना आयोग, तमिलनाडू ने सेमीनार का उद्घाटन किया।

वन स्वास्थ्य प्रबन्धन पर राष्ट्रीय सेमीनार

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर ने "एन.टी.पी.सी., दादरी द्वारा उगाये गये रोपण की आर्थिक उपयोगिता पर एन.टी.पी.सी., दादरी में 12 जनवरी 2012 को कार्यशाला; एन.टी.पी.सी. के अधिकारियों के लिए "पर्यावरण एवं वनीकरण" पर कार्यशाला – सह – प्रशिक्षण का 27 से 29 फरवरी 2012 को पंच नेशनल पार्क में, तथा कोनी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में 3 मार्च 2012 को अचनकमार – अमरकंटक बायोस्फेयर रिजर्व पर एक कार्यशाला का आयोजन किया।

प्रशिक्षण

वैज्ञानिक कर्मचारियों के क्षमता निर्माण के लिए मानव संसाधन विकास प्रयासों के रुप में कई प्रशिक्षण संस्थाओं में 08 प्रशिक्षण कार्यक्रम (एम.सी.टी. फेज – III – तृतीय कोर्स सहित) आयोजित किये गये जिसमे 07 संस्थाओं में 163 सहभागियों (एम.सी.टी. के 54 सहभागियों सहित) को प्रशिक्षित किया गया।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 6 से 10 फरवरी 2012 तक "जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन निम्नीकरण" पर महिला वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों के लिए एक

साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी प्रभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित था तथा इसमे 25 महिला वैज्ञानिकों तथा प्रौद्योगविदों ने सहभागिता की।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने भा.व.से. अधिकारियों के लिए "द सिग्निफिकेन्स एण्ड स्कोप आफ रेड/रेड प्लस फार इंडियन फारेस्ट" पर 13 तथा 14 फरवरी 2012 को दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित थी तथा विभिन्न राज्य वन विभागों के 18 भा.व.से, अधिकारियों ने इस प्रशिक्षण कार्यशाला में सहभागिता की।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने इंदिरा गान्धी राष्ट्रीय वन अकादमी, देहरादून में 12 मार्च से 5 मई 2012 तक भा.व.से., अधिकारियों के लिए मध्य कैरियर प्रशिक्षण आयोजित किया। 54 सहभागियों ने इस प्रशिक्षण में सहभागिता की।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने राष्ट्रीय बांस मिशन के अधीन बांस पर क्षेत्र कर्मचारियों के लिए तीन प्रशिक्षण 30 जनवरी 2012 से 3 फरवरी 2012, 5 से 9 मार्च 2012, 12 से 19 मार्च 2012 को आयोजित किये जिसमे तमिलनाडू के नौ जिलों से बागवानी विभागों से 100 कर्मचारियों ने सहभागिता की।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने "पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप : स्कोप इन फारेस्ट्री" पर पर्यावरण एव वन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित भारतीय वन सेवा अधिकारियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यशाला 21 तथा 22 फरवरी 2012 को आयोजित की। आन्ध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, जम्मू तथा कश्मीर, झारखण्ड, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम तथा तमिलनाडू से कुल 29 भारतीय वन सेवा अधिकारियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। डॉ. वी. के. बहुगुणा, भा.व.से., महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने सहभागियों को सर्टिफिकेट तथा स्मृति चिन्ह प्रदान किये।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर ने 21 से 23 फरवरी 2012 को ''कुछ महत्वपूर्ण प्रकाष्ठों की क्षेत्र पहचान'' पर लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम ; "चन्दन की लकड़ी : बीज, रखरखाव, पौधशाला प्रबन्धन" पर 13 से 17 फरवरी 2012 को एक साप्ताहिक प्रशिक्षण; "बांस संसाधन संरक्षण तथा प्रबन्धन तथा चन्दन कृषि" पर 28 से 29 फरवरी तथा 6 से 7 मार्च 2012 को दो प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा 22 से 25 फरवरी 2012 को नैनोटैक्नोलॉजी पर प्रशिक्षण आयोजित किये।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने 26 जून 2012 को यू.एन.डी.पी. परियोजना के अधीन खुंटी जिले के गुटुहाटु ग्राम के किसानों के लिए "कुसुम वृक्षों में वैज्ञानिक पद्धति द्वारा लाख खेती" पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट ने 13 से 16 फरवरी 2012 को राज्य पर्यावरण तथा वानिकी प्रशिक्षण संस्थान (एस.ई.एफ.टी.आई.) दीमापुर, नागालैंड तथा नागालैंड वन विभाग, नागालैंड सरकार के प्रशिक्षु अधिकारियों के लिए ''वन तथा भू – संसाधन सर्वेक्षण में ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम अनुप्रयोग'' पर प्रशिक्षण – सह – कार्यशाला आयोजित की ।

वन विज्ञान केन्द्र/प्रदर्शन ग्राम

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने "शहरी वानिकी, औषधीय पादपों की खेती तथा होली के पर्यावरण मित्र रंग" पर वन विज्ञान केंद्र चंडीगढ़ तथा प्रदर्शन ग्राम श्यामपुर में "औषधीय पादपों, मशरुम की खेती तथा इसकी उपयोगिता" तथा ''वन विज्ञान केन्द्र हल्द्वानी में "औषधीय पादपों की खेती, उपयोगिता , तथा व्यापार समस्याऐं तथा समाधान'' पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर ने "बायो – फर्टीलाइजर प्रोडक्शन एण्ड एप्लीकेशन" तथा "इनसैक्ट पैस्ट तथा डिजीज मैनेजमैंट इन फारेस्ट नर्सरी" में कान्डयूर ग्राम, कोयम्बटूर जिले के किसानों तथा महिला स्वयं सहायता समूह, तमिलनाडू के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये।

वर्षा वन अनुसन्धान संस्थान, जोरहाट ने वन विज्ञान केन्द्र असम के अधीन बांस, बेंत तथा वर्मीकम्पोस्ट पर धारणीय प्रबन्धन, बांस की उत्पाद विभिन्नता तथा उपयोगिता प्रवर्धन, एस.ई.एफ.टी.आई., दीमापुर, तथा सैनिक स्कूल, पुंगलवा पेरीन जिले में वन्य जीव प्रबन्धन तथा वन विज्ञान केन्द्र हाथीपारा में जे.एफ.एम. सी. सदस्यों/पणधारियों की क्षमता निर्माण/वानिकी विस्तार पर 8 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये।

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर द्वारा दादरा नगर हवेली (संघ राज्य क्षेत्र (यू.टी.)) के सहयोग से खानवेल सिलवासा में एक नये वन विज्ञान केंद्र का उद्घाटन श्री एस.के. अग्रवाल,मुख्य वन संरक्षक, डी.एन.एच. वन विभाग द्वारा किया गया। इस केंद्र में एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 24 तथा 25 जनवरी को किया गया।इस प्रशिक्षण में 29 सहभागियों(15 वन कर्मी तथा 14 किसान) ने सहभागिता की।

हिमालय वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला में वन विज्ञान केन्द्र, सुन्दर नगर में "औषधीय पादपों के धारणीय उपयोग, संरक्षण तथा खेती पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया जिसमे राज्य वन विभागों के 50 स्थल कर्मचारियों ने सहभागिता की।

अनुसन्धान खोजें

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून ने पोंगौमिया पिन्नाटा से पृथक्कृत जैन्थोफाइल, पालीफिनौल, वसा, कच्चे फाइबर तथा पत्ता प्रोटीन सान्द्र के राख तत्वों के संदर्भ में पोषक तत्वों का निर्धारण किया। उन्होने पोषणरोधी तत्वों का भी निर्धारण किया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलौर में आयोडीन का एक उत्प्रेरक के रुप में प्रयोग करके एसिटिक एनहाइड्राइड तथा ब्यूटरिक एनहाइड्राइड द्वारा काष्ठ के रासायनिक संशोधन से सम्बन्धित एक साल्वैंट मुक्त प्रक्रिया विकसित की गई है। संशोधित काष्ठ नमूनों ने भूरे राट कवक तथा सफेद राट कवक के प्रति अच्छे प्रतिरोध का प्रदर्शन किया। उपचारित काष्ठ पराबैंगनी प्रकाश के विरुद्ध स्थिरता दिखाने में आंशिक रुप से सक्षम दिखाई दिए।

मधुमेहरोधी गुणों के लिए गार्सिनिया इंडिका के सक्रिय तत्वों का फार्माकोलाजिकल मूल्यांकन किया गया। फल के छिलकों के सत्वों को पुनः कालम क्रोमेटोग्राफी के अधीन परीक्षित किया गया तथा क्लोरोफार्म तथा बेन्जीन का उपयोग करते हुए दो भिन्न अंशो को अलग किया गया। इसका प्रयोग चूहों पर किया गया तथा पाया गया कि 200 मिग्रा. तथा 400 मिग्रा./किलोग्राम शरीर भार में जब दिया गया तब शूगर का स्तर क्रमश 49% तथा 60% तक कम हुआ जिससे ज्ञात हुआ कि गार्सीनिया इंडिका मधुमेह रोधी दवाई का एक अच्छा स्रोत है।

11.80–16.12 कि.ग्रा. मी^{3} के सी.सी.ए. सान्द्रण के साथ उपचारित प्रकाष्ठ पर नगण्य पर्याक्रमण देखा गया/नियंत्रित पैनल पूरी तरह से परीक्षित कवक द्वारा पर्याक्रमित पाए गए।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर द्वारा 27 से 29 फरवरी 2012 से एन.टी.पी.सी., कोरबा में 20 अभिज्ञात वृक्ष प्रजातियों की कलमों द्वारा प्रतिगमन समीकरण विकसित किया गया।

परामर्शी सेवाएं

पुनरुद्धार तथा पुनर्स्थापन योजना (आर.एण्ड.आर.)

- भा.वा.अ.शि.प., को कर्नाटक के बेल्लारी, चित्रदुर्ग तथा तुमकुर जिलों के खनन प्रभावित क्षेत्रों के लिए पुनरुद्धार तथा पुनर्स्थापन योजना की तैयारी के लिए कर्नाटक सरकार द्वारा चौदह करोड़ की परामर्शी सेवाओं का कार्य प्रदान किया गया।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून चित्रदुर्ग में ई.आई.ए. दल के साथ जॉन खदानों के ओ.बी. ढेर का निरीक्षण करते हुए

- 1 जनवरी से 30 जून 2012 की अवधि के दौरान 10 खानों की पुनरुद्धार तथा पुनर्स्थापन योजना तैयार कर कर्नाटक सरकार को प्रस्तुत की गई है जो कि माननीय सर्वोच्च न्यायालय की केन्द्रीय अधिकृत समिति द्वारा अनुमोदित कर दी गई है।
- हिमाचल प्रदेश में सतलुज बेसिन पर जल विद्युत परियोजनाओं के वृहद पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अध्ययन पर परामर्शी सेवाओं के लिए रू. 2.91 करोड़ हिमाचल प्रदेश सरकार के उर्जा निदेशालय के द्वारा प्रदान किये गये। यह अध्ययन भा.वा.अ.शि.प. द्वारा अग्रणी रुप से अन्य संस्थानों के साथ मिलकर किया जाना है, जो कि निम्नलिखित हैं:

  1) वैकल्पिक जल उर्जा केन्द्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की;

  2) शीतजल मत्स्य अनुसन्धान, भीमताल तथा

  3) सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास केन्द्र, कोयम्बटूर

विशिष्ट अतिथियों का दौरा

योजना आयोग का एक दल जिसमे श्री रंजन चटर्जी, वरिष्ठ सलाहकार तथा डॉ. विश्वजीत बैनर्जी, निदेशक (वानिकी) थे, ने भा.वा.अ.शि.प. का दौरा किया तथा 19 जनवरी 2012 को भा.वा.अ.शि.प. तथा वन अनुसन्धान संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिकों के साथ संवादात्मक बैठक की। डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने भा.वा.अ.शि.प. की जारी अनुसन्धान योजनाओं के बारे में संक्षेप में बताया तथा नये प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। उन्होने योजना आयोग को भा.वा.अ.शि.प. की बजट की स्थिति से अवगत करवाते हुए, किसानों के लाभ के लिए विमोचित किये गये क्लोनों तथा बिहार परियोजना की सफलता के बारे में भी बतलाया। योजना आयोग ने उन्हे भरपूर सहयोग का आशवासन दिलाया। श्रीमान चटर्जी ने परिषद् के वन अधिकारियों तथा

हितधारकों की बैठक

भा.वा.अ.शि.प. के प्रमण्डल कक्ष में 4 मई 2012 को सतलुज बेसिन के कार्य योजना निश्चित करने, आधार रेखा सूचना को अन्तिम रुप प्रदान करने तथा रोड मैप पर विचार विमर्श करने के लिए हितधारकों की एक बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्यालय से भा.वा.अ.शि.प. दल, हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लि., शिमला, उर्जा निदेशालय, हिमाचल प्रदेश सरकार, वैकल्पिक हाइड्रो एनर्जी केन्द्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रुड़की, शीत जल मत्स्य अनुसन्धान निदेशालय, भीम ताल, सलीम अली पक्षीविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास, कोयम्बटूर और कार्य क्षेत्र विशेषज्ञ ने सहभागिता की।

वैज्ञानिकों के अद्भुत सम्मिश्रण की भरपूर प्रशंसा की तथा भा.वा.अ.शि.प. के नये प्रयासों की प्रशंसा करते हुए सुझाव दिया कि नये अनुसन्धान प्रयासों के प्रभावों का आकलन भी किया जाना चाहिए।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., भा.वा.अ.शि.प. में योजना आयोग के दल के साथ

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने 31 मई से 3 जून 2012 के दौरान वन उत्पादकता संस्थान, रांची का दौरा किया। महानिदेशक ने संस्थान के अनुसन्धान केन्द्रों तथा परियोजना स्थलों का दौरा तथा निरीक्षण किया। उन्होने माननीय श्री अर्जुन मुण्डा मुख्यमंत्री झारखण्ड़ से भी भेंट की तथा भा.वा.अ.शि.प. द्वारा वानिकी अनुसन्धान, आजीविका प्रोत्साहक कार्यक्रम, अकाष्ठ वन उपज के धारणीय प्रबन्धन तथा झारखण्ड में लाख की वैज्ञानिक खेती के प्रयासों के बारे में बताया। उन्होंने दौरे के दौरान 31 मई 2012 को लीड उद्यान के विवेचना केन्द्र का शिलान्यास भी किया।

महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., व.उ.सं., रांची में लीड उद्यान के विवेचना केन्द्र का शिलान्यास करते हुए

उत्तराखण्ड के राज्यपाल, महामहिम श्री अजीज़ कुरेशी ने 22 मई 2012 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून का दौरा किया तथा "अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस" समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में शोभा बढ़ाई।

श्री तरुण गोगोई, मुख्यमंत्री, असम ने 1 जून 2012 को काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान का दौरा किया तथा संस्थान के क्रियाकलापों को समझने

के लिए अधिकारियों के साथ बातचीत की तथा वैज्ञानिकों को ग्रीन इकोनामी के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए कहा तथा उत्तरपूर्वी राज्यों के साथ सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री तरुण गोगोई, माननीय मुख्यमंत्री, असम, का का.वि.प्रौ.सं., बैंगलोर का दौरा

राजभाषा पर संसदीय समिति की तीसरी उप समिति के माननीय संसद सदस्यों प्रो. अलका बलराम क्षत्रिय, श्री हुकुम सिंह नारायण यादव, डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह तथा डॉ. राम प्रकाश ने 29 मई 2012 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून का दौरा किया तथा संस्थान में राजभाषा हिन्दी कार्यान्वयन का निरीक्षण किया।

राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए एक संसदीय समिति ने 29 मई 2012 को उष्णकटिबन्धीय वन अनुसन्धान संस्थान, जबलपुर का दौरा किया तथा दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के उपयोग की प्रगति का मूल्यांकन किया।

माननीय संसद सदस्यों श्री अनिल माधव, श्री एस. पी. वाई. रेड्डी तथा श्री महेन्द्र सिंह चौहान ने 13 जून 2012 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून का दौरा किया।

विविध

डॉ. पी. जे. दिलीप कुमार, भा.व.से., महानिदेशक (वन) तथा विशेष सचिव, भारत सरकार ने डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून की उपस्थिति में 4 जनवरी 2012 को काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंगलोर में काष्ठ संग्रहालय – सह – विवेचना केन्द्र का उद्घाटन किया।

का.वि.प्रौ.सं., बैंगलौर में संग्रहालय–सह–विवेचना केन्द्र का उद्घाटन

बिहार परियोजना : बिहार में वैशाली जिले में पापुलर आधारित कृषि वानिकी कार्यक्रम "समुदाय आधारित समन्वित वन प्रबन्धन एवं संरक्षण योजना" (एस.ए.एस.वी.पी.एस.वाई.) कुल ₹ 51 करोड़ के बजट के साथ राज्य वन विभाग बिहार के सहयोग से भा.वा.अ.शि.प. द्वारा 2005 में प्रारम्भ की गई थी। इस योजना के अर्न्तगत अब तक पॉपुलर के 65.45 लाख ईटीपी तथा अन्य प्रजातियों के 81 लाख पादप वितरित किये जा चुके हैं।

भारत के वन प्रारुप

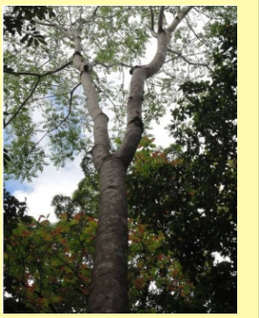

निकोबार द्वीप समूह में अर्ध सदाबहार वनों में जैन्थोजाइलम रेट्सा

भारत के वनों को पहली बार 1935 में सर एच. जी. चैम्पियन द्वारा वर्गीकृत किया गया तथा 1968 में दोबारा चैम्पियन तथा सेठ ने संशोधित कर भारत के वनों को विभाजित करते हुए 16 प्रारुपों तथा 221 उप प्रारुपों में वर्गीकृत किया। अब 45 वर्ष बाद भी चैम्पियन तथा सेठ के वर्गीकरण को वन प्रबन्धन के उद्देश्यों के लिए प्रयोग किया जा रहा है जबकि भारत के वनों में अब तक मानवीय हस्तक्षेप के कारण तथा अन्य अनेक कारणो से प्रारुप परिवर्तन आये है। अतः भा.वा.अ.शि.प. द्वारा जलवायु तथा अन्य घटकों के कारण वनों में आये परिवर्तनों का आकलन करने तथा वन प्रारुपों को संशोधित करने के उद्देश्य से एक. टास्क फोर्स बनाई गई है। इस टास्क फोर्स में डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. अध्यक्ष, तथा डॉ. एम. एस स्वामीनाथ,अतिरिक्त प्रधान मुख्य वन संरक्षक, कर्नाटक, सह अध्यक्ष हैं। श्री संदीप त्रिपाठी, उप महानिदेशक (अनुसन्धान), भा.वा.अ.शि.प. इस टास्क फोर्स के सदस्य सचिव हैं। यह टास्क फोर्स कार्य को वर्ष 2012 की समाप्ति तक समाप्त कर लेगी। यह अध्ययन देश के वनों में जलवायवीय परिवर्तनों के अनुश्रवण के लिए आधार रेखा के रुप में भी कार्य करेगा।

मानक सिद्ध, देहरादून वन प्रभाग (उत्तराखण्ड) के निकट 5 बी सी1ए शुष्क शिवालिक साल वन

अनुदान

भा.वा.अ.शि.प. देश में वानिकी की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बुनियादी ढ़ांचे को सशक्त करने के लिए कृषि विश्वविद्यालय के अधीन पूर्व स्नातक तथा स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रम चला रहे विभिन्न वानिकी अनुसन्धान विश्वविद्यालयों / संस्थानों को अनुदान दे रहा है। 1 अप्रैल 2011 से मार्च 2012 के दौरान ₹ 100.00 लाख 10 विश्वविद्यालयों को विमोचित किये गये।

अनुसन्धान योजना

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् ने जनवरी से मार्च 2012 की तिमाही के लिए भा.वा.अ.शि.प. की शिकायत निवारण प्रकोष्ठ की तिमाही बैठक 29 मार्च 2012 को देहरादून में आयोजित की। भा.वा.अ.शि.प. द्वारा 27 से 28 मार्च 2012 को वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में "आरक्षण नीति" पर भा.वा.अ.शि.प. तथा वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून के अधिकारियों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण भी आयोजित किये गए।

भा.वा.अ.शि.प. ने 7 जनवरी 2012 को भा.वा.अ.शि.प. में मानव संसाधन विकास समिति की बैठक आयोजित की तथा वैज्ञानिक / प्रबन्धकीय कार्डर / अनुसन्धान सहायक कर्मचारियों की क्षमता निर्माण के लिए पुरानी मानव संसाधन विकास योजना को संशोधित किया।

भा.वा.अ.शि.प. को पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा "यू.एन.सी.सी.डी. की दस वर्षीय रणनीति के साथ राष्ट्रीय कार्रवाई कार्यक्रम के संरेखण के लिए क्षमता बढ़ाने तथा यू.एन.सी.सी.डी. सचिवालय को राष्ट्रीय रिर्पोटिंग" पर परियोजना के निष्पादन का कार्य दिया गया है। उपर्युक्त परियोजना क्रियाकलाप भा.वा.अ.शि.प. के जैवविविधता संरक्षण प्रभाग द्वारा निष्पादित किया जायेगा।

वार्षिक समीक्षा

भा.वा.अ.शि.प., के अनुश्रवण एव मूल्यांकन प्रभाग द्वारा संस्थानों की सभी जारी अनुसन्धान परियोजनाओं का वार्षिक मूल्यांकन तथा समीक्षा एक नियमित क्रियाकलाप है। परियोजनाओं को समय से पूरा करने तथा उद्देश्यों को पूर्णता से प्राप्त करने के लिए यह प्रभाग सुधारात्मक उपाय सुझाता है। वर्ष 2012 के दौरान जारी अनुसन्धान परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा के लिये अनुमोदित कार्यक्रम निम्नवत है:

व.उ.सं., रांची	2 से 4 जुलाई 2012
हि.व.अ.सं., शिमला	23 से 26 जुलाई 2012
व.अ.सं., देहरादून	6 से 9 अगस्त 2012
व.अ.व.प्र.सं., कोयम्बटूर	21 से 24 अगस्त 2012
का.वि.प्रौ.सं., बैंगलौर	27 से 29 अगस्त 2012
उ.व.अ.सं., जबलपुर	18 सितम्बर 2012
शु.व.अ.सं., जोधपुर	24 से 27 सितम्बर 2012
व.व.अ.सं. जोरहाट	9 से 12 अक्टूबर 2012

विश्व पर्यावरण दिवस

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. तथा कुलाधिपति, वन अनुसन्धान संस्थान (सम) विश्वविद्यालय ने 5 जून 2012 को वाडिया इंस्टीट्यूट आफ हिमालयन जियोलॉजी, देहरादून में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर "बदलता हुआ हिमालयन पर्यावरण तथा ग्लोबल वार्मिग का प्रभाव" पर एक भाषण दिया तथा जलवायवीय तनावों से हिमालय के परिरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून वाडिया इंस्टीट्यूट आफ हिमालयन जियोलॉजी में भाषण देते हुए

अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस

शुष्क वन अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर ने राज्य वन विभाग तथा जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय के सहयोग से 22 मई 2012 को अन्तर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस मनाया। इस अवसर पर विभिन्न वृक्ष प्रजातियों तथा औषधीय पौधों के 50 अंकुरों को रोपित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. बी. एस. राजपुरोहित, कुलाधिपति, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर तथा विशिष्ट अतिथि श्री ए. के. सिंह, मुख्य वन संरक्षक, जोधपुर तथा श्री आई. सिंह, मुख्य वन संरक्षक/वन्य जीव, जोधपुर थे। डॉ टी.एस.राठौर, निदेशक, शु.व.अ.सं. ने थार मरुस्थल में जैवविविधता तथा इसके उपयोग पर बल दिया।

विश्व वानिकी दिवस

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून में 21 मार्च 2012 को विश्व वानिकी दिवस मनाया गया। वन अनुसन्धान संस्थान सूचना केन्द्र में एक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमे संस्थान की प्रगति को दर्शाते हुए पोस्टर तथा मॉडल सम्मिलित थे।

मरुस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस

स्वस्थ मृदा : स्वस्थ जीवन

मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस के अवसर पर स्लेम परियोजना के अधीन 17 जून 2012 को भा.वा.अ.शि.प. में "स्वस्थ मृदा : स्वस्थ जीवन" पर एक सेमीनार आयोजित किया गया। डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प.,ने सेमीनार का उद्घाटन किया। श्री बी. एम. एस., राठौर, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, नई दिल्ली तथा श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) भी इस अवसर पर उपस्थित थे। डॉ. वी. के. बहुगुणा ने मृदा की उर्वरकता के सुधार की आवश्यकता पर बल दिया जो कि दिन– प्रतिदिन घट रही है। उन्होने जोर देकर कहा कि हमे इस संकट के प्रति जागरुक होना चाहिए तथा यह सेमीनार लोगों के बीच जागरुकता उत्पन्न करने में सहायता करेगा। श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) ने सहभागियों का स्वागत किया तथा सेमीनार के विषय "स्वस्थ मृदा : स्वस्थ जीवन" के विषय से परिचित करवाया। श्री बी. एम. एस. राठौर, संयुक्त सचिव, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय ने पारम्परिक ज्ञान पर जोर देते हुए कहा कि मृदा एक जीवित माध्यम है तथा हमे इसकी रक्षा करनी चाहिए। डॉ. एम. एन. झा, पूर्व प्रमुख, वन मृदा तथा भूमि सुधार प्रभाग, व.अ.सं. ने अपने प्रस्तुतीकरण में मृदा तथा उसके घटकों के महत्व को उजागर किया।

मरूस्थलीकरण रोक पर विश्व दिवस के अवसर पर डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार) (सम्बोधित करते हुए) एवं अन्य उच्चाधिकारीगण

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस

वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून मे 11 मई 2012 को राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस मनाया गया। संस्थान के सूचना केन्द्र के सामने एक विशेष प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में सामान्य जन उपयोगी वैज्ञानिक तथा तकनीकी उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का उदघाटन डॉ. पी. पी. भोजवैद, निदेशक, वन अनुसन्धान संस्थान ने किया।

राजभाषा समाचार

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून ने 10 मई 2012 को भा.वा.अ.शि.प. के सभागार में राजभाषा हिन्दी पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की। कार्यशाला में

डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून, कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए

श्री. एस. पी. चौबे, निदेशक (राजभाषा) पर्यावरण एवं वन मंत्रालय तथा डॉ. भगवान दास पटेरिया, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्, नई दिल्ली मुख्य वक्ता थे। डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने कार्यशाला का उद्घाटन किया तथा भा.वा.अ.शि.प. तथा वन अनुसन्धान संस्थान, देहरादून से लगभग 200 अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।

भा.वा.अ.शि.प. ने 22 मई 2012 को भा.वा.अ.शि.प. सभागार में हिन्दी काव्य गोष्ठी आयोजित की। गोष्ठी में 9 प्रसिद्ध राष्ट्रीय स्तर के कवि/कवयित्रियों को आमंत्रित किया गया । डॉ. वी. के. बहुगुणा, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने काव्य गोष्ठी का शुभारम्भ किया। निदेशक, व.अ.सं. तथा परिषद के उप महानिदेशकों सहित मुख्यालय एवं संस्थान के 200 से अधिक उच्च अधिकारियों, वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों ने काव्य गोष्ठी का आनंद लिया।

भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में "हिन्दी काव्य कोष्ठी"

भविष्य की योजनाएं

भा.वा.अ.शि.प. का विजन दस्तावेज

सम्पूर्ण जनशक्ति की उपयोगिता तथा भविष्य की अनुसन्धान आवश्यकताओं के लिए कार्यक्रम आधारित अनुसन्धान के लिए आगामी15–20 वर्षों के लिए भा.वा.अ.शि.प. का विजन दस्तावेज तैयार किया गया है। 6 राष्ट्रीय परियोजना निदेशकों के निवेश को विजन दस्तावेज में शामिल किया जायेगा जोकि आजीविका उत्पादन तथा भविष्य की योजनाओं तथा उसमे भा.वा.अ.शि.प. की भूमिका तथा भा.वा.अ.शि.प. द्वारा सामना की जा रही चुनौतियों को उजागर करेगा।

भारत में जैवविविधता

भा.वा.अ.शि.प. "भारत में जैवविविधता" पर एक काफी टेबल बुक प्रकाशित करने की प्रक्रिया में है। पुस्तक देश के विभिन्न वन प्रारुपों, जैवविविधता संवेदनशील स्थान, वानस्पतिक तथा पशु विविधता, कीट तथा तितलियां, लाभ तथा प्रावधानीकरण सेवाएं तथा भारत में जैवविविधता संरक्षण के प्रयासों को मुख्य रुप से समाहित करेगी। यह आवास विध्वंस, जलवायु परिवर्तन तथा देश में आक्रमक प्रजातियों सहित भारत की जैवविविधता द्वारा सामना किए जा रहे संकटों तथा चुनौतियों को भी उजागर करेगी। जैवविविधता के ह्रास को नियंत्रित करने के लिए उठाए गए कदमों के बारे में भी देश में रक्षित क्षेत्र नेटवर्क तथा संरक्षण स्थलों के अधीन विचार विमर्श किया जायेगा।

स्टेट आफ नालेज रिपोर्ट

भा.वा.अ.शि.प. के सहयोग के साथ राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय अनुसन्धान को समाहित करते हुए वानिकी के विभिन्न विषयों पर 35 स्टेट आफ नालेज रिर्पोट पर तेजी से कार्य चल रहा है।

पंचायतीराज संस्थानों के साथ इंटरफेस

भा.वा.अ.शि.प. पंचायत तथा मानव आयाम प्रभाग के द्वारा वन तथा गैर वन भू –उपयोगों पर एक आधार रेखा विकसित करने के लिए देश में पंचायती राज संस्थानों के साथ इंटरफेस के द्वारा अपने क्रियाकलापों को फैला रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय पापुलर कमीशन

भारत के लोगों की आजीविका तथा अर्थव्यवस्था में पॉपलर तथा विलो के महत्वपूर्ण स्थान तथा भा.वा.अ.शि.प. द्वारा किये गये उत्कृष्ट कार्यो के महत्व को स्वीकारते हुए खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ.ए.ओ.) तथा अन्तर्राष्ट्रीय पॉपलर कमीशन (आई.पी.सी.) ने एफ.ए.ओ. की तकनीकी सांविधिक संस्था की कार्यकारी समिति की 46वीं बैठक तथा अर्न्तराष्ट्रीय पॉपलर कमीशन के 24वें सत्र को देहरादून में आयोजित करने की सहमति दी है। भारत में आई.पी.सी. का इस प्रकार का प्रतिष्ठित आयोजन पहली बार किया जा रहा है। विस्तृत सूचना एवं ऑनलाईन पंजीकरण हेतु भा.वा.अ.शि.प. निर्मित वेबसाइट http://ipc2012.icfre.gov.in पर सम्पर्क करें।

संरक्षक :

डॉ. वी.के.बहुगुणा, महानिदेशक, **भा.वा.अ.शि.प.**

सम्पादक मण्डल :

श्री शैवाल दासगुप्ता, उप महानिदेशक (विस्तार)

अध्यक्ष

सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)

मानद सम्पादक

श्री रमाकान्त मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग)

सदस्य

"वानिकी समाचार" में प्रकाशित सामग्री सम्पादक मण्डल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
प्रकाशन हेतु सामग्री मानद सम्पादक को प्रेषित की जा सकती है।
डिजिटल संस्करण **www.icfre.gov.in** पर उपलब्ध है।

प्रेषक:
सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार)
विस्तार निदेशालय, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
ई–मेल : **adg_mp@icfre.org**
दूरभाष : 0135–2755221, फैक्स : 0135–2750693